रजि. नं. पी.बी./जे.एल-/0011/2012-14 RNI No. 26281/74

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

साप्ताहिक
आर्य मर्यादा
आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष–71, अंक : 24, 18/21 सितम्बर 2014 तदनुसार 6 आश्विन सम्वत् 2071 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

परमेश्वर सब का अधिष्ठाता है

-ले० स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ

आतिष्ठन्तं परि विश्वे अभूषञ्छ्रियो वसानश्चरति स्वरोचिः।
महत्तद् वृष्णो असुरस्य नामा विश्वरूपो अमृतानि तस्थौ।।

–ऋ. 3/38/4

शब्दार्थः आ+तिष्ठन्तम्ः= सब ओर रहने वाले भगवान को **विश्वे**= सभी **परि**= सब प्रकार से **आभूषन्**= शोभित करते हैं। वह **स्वरोचिः**= स्वप्रकाश **श्रियः**= शोभाओं को **वसानः**= धारण करता हुआ **चरति**= संसार को चलाता है। उस **वृष्णः**= सुखवर्षक **असुरस्य**= प्राणाधार भगवान का **तत्**=वह **महत्**= महान् **नाम**= यश है कि वह **विश्वरूपः**= सर्वस्रष्टा **अमृतानि**=अमृतों का, गांवों का, प्रकृति का **तस्थौ**=अधिष्ठाता है।

व्याख्या= भगवान स्थित है, गतिरहित है, किसी एक स्थान पर स्थित नहीं, वरन् सर्वत्र उपस्थित है। सूर्य-चन्द्र आदि देवों की कान्ति और आभा देखने योग्य है। ये सारे आभावान् पदार्थ भगवान् की शोभा बढ़ा रहे हैं, मानों उसकी महिमा गा रहे हैं। कहीं किसी को भ्रम न हो जाए कि यह सूर्य-चन्द्र आदि से प्रकाशित होता है, इस भ्रम का वारण करने के लिये कहा कि वह **स्वरोचिः** स्वप्रकाश है। किसी दूसरे से प्रकाशित नहीं होता। स्वप्रकाश होने के कारण तथा इन सब का मूल प्रकाश होने के कारण सारी शोभाओं को वह धारे हुये है। अर्थात संसार में जहां कहीं शोभा, कान्ति, तेज, उत्कर्ष है- वह वास्तव में परमेश्वर का है। जब सभी प्रकार का उत्कर्ष परमेश्वर का है तो आनन्द, सुख भी उसी का है, इसलिये यही और वेद में अन्यत्र अनेक स्थलों पर उसे वृषा-सुखवर्षक कहा है। जीवनोपयोगी सारी सामग्री का स्वामी वह है, अतः असुर=असु+र=प्राणदाता=जीवनदाता भी वही है।

संसार में जितने रूप हैं, इनका निरुपण करने, चित्रित करने वाला वही है, अतः वह विश्वरूप है।

जीव के लिये तथा जीव प्रकृति के संयोग से वह संसार बनाता है, अतः वह इनका अधिष्ठाता भी है।

महात्मा श्वेताश्वतर ने मानो इस मंत्र के एक अंश को हृदय में रख कर कहा-

सर्वा दिश ऊर्ध्वमधश्च तिर्य्यक् प्रकाशयन् भ्राजते यद्वदनड्वान्।
एवं स देवो भगवान् वरेण्यो योनिस्वभावानधितिष्ठत्येकः।। 4।।
यच्च स्वभावं पचति विश्वयोनिः पाच्यांश्च सर्वान् परिणामयेद्यः।
सर्वमेतद्विश्वमधितिष्ठत्येको गुणॉश्च सर्वान् विनियोजयेद्यः ।। 5।।

–श्वेता, 5

जिस प्रकार सूर्य ऊपर, नीचे, तिरछी सभी दिशाओं को प्रकाशित करता हुआ चमकता है, इसी भान्ति वह सर्वश्रेष्ठ भगवान परमेश्वर अकेला ही कारण तथा स्वाभावों का अधिष्ठाता है। जो विश्वयोनि-विश्वरूप स्वभाव का परिपाक करता है और पकने योग्य सभी पदार्थ-धर्मों का यथायोग्य विनियोग करता है, वह अकेला ही इन सब का अधिष्ठाता है।

ऋषि ने वेदमंत्र का आशय समझाने के लिये सूर्य का दृष्टान्त दिया है। सूर्य पृथिवी आदि ग्रहों, चन्द्र आदि उपग्रहों को प्रकाशित करता हुआ स्वयं चमकता रहता है। इसी प्रकार परमदेव परमेश्वर- **श्रियो वसानश्चरति स्वरोचिः**- सब शोभाओं को धारण करता हुआ स्वप्रकाश है।

सूर्य एक स्थान पर रहता हुआ सभी सूर्यादि स्वमण्डलान्तर्गत ग्रहों, उपग्रहों, नक्षत्रादि प्रकाशाप्रकाश-पुंजों को अपने आकर्षण-विकर्षण-सामर्थ्य से नियंत्रण में रखता है परन्तु उसका प्रभाव अतीव विस्तृत होता हुआ भी संकुचित है, ससीम है। इस ब्रह्माण्ड में ऋग्वेद 9/114/3 के शब्दों में **सप्त दिशो नाना सूर्याः** इन सात दिशाओं में अनेक सूर्य हैं। प्रत्येक सूर्य का प्रभाव परिमित ही रहेगा, किन्तु अनन्त सूर्यों को प्रकाशित करने वाले भगवान की महिमा का क्या कहना। सूर्य का प्रभाव अनित्य पदार्थों पर है किन्तु भगवान- **विश्वरूपो अमृतानि तस्थौ**- विश्वरूप सभी अमृतों=अविनाशी जीवों तथा प्रकृति का अधिष्ठाता है, अर्थात् उनका यथायोग्य विनियोग करने में समर्थ है।

कई मीमांसकों का मत है कि प्रत्येक वेदवाक्य में विधि या निषेध अवश्य होना चाहिये। इस सिद्धान्त को लेकर वे प्रत्येक वेदमंत्र के साथ योग्यतानुसार ऐसा करो या ऐसा मत करो लगा देते हैं। कदाचित इसी भाव से श्वेताश्वतर महर्षि ने इसका भाव बताते हुये दूसरे स्थान पर कहा है-

यो योनिं योनिमधितिष्ठत्येको यस्मिन्निदं सं च वि चैति सर्वम्।
तमीशानं वरदं देवमीड्यं निचाय्येमां शान्तिमत्यन्तमेति।।

श्वेता, 4/11

जो प्रत्येक कारण तथा स्थान पर अकेला ही अधिकार रखता है, जिसमें यह सब संयुक्त वियुक्त होता रहता है, मनुष्य उस उत्तम दाता पूज्य ईश्वर देव को धारण करके इस शान्ति को पूरी तरह पाता है। इस शांति प्राप्ति के लिये भगवान को धारण करना चाहिये।

–स्वाध्याय संदोह से साभार

स्वाध्याय के लाभ

-ले० स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती

(गतांक से आगे)

वास्तव में कोई भी शारीरिक रोग तभी होता है, जबकि मानसिक रोग हो। इसलिए कहा **आत्मनः** आत्मा का चिकित्सक हो जाता है। वह रोग के मूल को जानता है और उसे वहीं से उखाड़ फेंकता है। खांसी, जुकाम, ज्वर आदि रोगों का अपनयन तो करता ही है, परन्तु इनके मूल मानसिक रोगादि विकारों की चिकित्सा भी कर सकता है। उसे किसी डाक्टर के पास जाने की आवश्यकता नहीं रहती। मोहग्रस्त अर्जुन की भांति अन्य के पास अपनी चिकित्सा कराने नहीं जाता।

''**परमचिकित्सक आत्मनो भवति**'' में एक और भाव भी अन्तर्हित है। **स्वस्य अध्यायः स्वाध्यायः** अपने-आपका अध्ययन भी स्वाध्याय है। प्रायः देखा गया है कि डाक्टर अपना इलाज स्वयं नहीं कर पाते। वे ऐसे घिर जाते हैं कि उन्हें अपनी चिकित्सा समझ नहीं आ पाती, परन्तु स्वाध्यायशील व्यक्ति को यह कमाल हासिल होता है कि वह चाहे अन्य की चिकित्सा नहीं कर पाते, अपनी चिकित्सा वह कर ही लेता है।

6. इन्द्रियसंयमः भवतिः- उपर्युक्त पांच लाभों के अतिरिक्त स्वाध्याय के अनेकों लाभ हैं। उनमें छठा लाभ इन्द्रियसंयम है। आज संसार के सामने यही समस्या है कि व्यक्ति इन्द्रियनिग्रह कैसे करे ? इन्द्रियनिग्रह के कृत्रिम उपाय अपनाए जा रहे हैं। स्वाभाविक निग्रह में संसार को विश्वास ही नहीं रहा। परन्तु शतपथकार याज्ञवल्क्य कहते हैं कि स्वाध्याय से स्वाभाविक इन्द्रियसंयम होता है। इन्द्रियों के वशीकरण से जब और जितना चाहो उपभोग कर सकते हो। इन्द्रियां स्वभावतः अपने विषयों में जाती हैं और इसी उपयोग के लिए हैं, परन्तु जैसे ही मर्यादा का उल्लंघन किया कि विषय-ग्रस्त हुईं, बजाय वरदान के अभिशाप सिद्ध हो गई। इसलिए सधे हुए घोड़े की भांति इनका संयम आवश्यक है-ज़रा-सा इशारा पाते ही रथवान् के इशारे पर चलें, न कि लगाम तुड़वाकर रथ और रथी को खड्डे में डाल दें और स्वयं भी विनाश को प्राप्त हों।

इन्द्रियसंयम इसलिए आवश्यक है क्योंकि यत्नवान् और मेधावी व्यक्ति की भी इन्द्रियां विषयाभिमुख हो जाती हैं, पुरूष को क्षुभित कर देती हैं, व्याकुल बना देती है और उसके विवेक-विज्ञान युक्त मन को भी हर लेती है। इसलिए इन्द्रियों को सम्यक्तया वश में करके समाहित चित्त हो जाए। जिसकी इन्द्रियां वश में हैं, स्थित-प्रज्ञ भी तो वही होता है। श्री कृष्ण ने गीता (२।६१) में कहा है, ''**वशे हि यस्येन्द्रियाणि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता**'' जिसकी इन्द्रियां वश में है उसी की प्रज्ञा अविचल, बुद्धि स्थिर होती है। एक भी इन्द्रिय क्षरित होने लगी कि व्यक्ति की प्रज्ञा क्षीण होनी शुरू हुई, ठीक उसी प्रकार कि जैसे माशक में से पानी रिसने पर वह सर्वथा खाली हो जाती है। स्वाध्याय के आठवें लाभ '**प्रज्ञावृद्धिर्भवति**' का इससे सीधा सम्बन्ध है। **संयम** शब्द का अर्थ है-वशीकरण, वशित्व, स्वामित्व। इसलिए इन्द्रिय-संयम का अर्थ हुआ इन्द्रियों का वशीकरण, इन्द्रियों का प्रभुत्व ''**हीनातिमिथ्यायोगानां प्रभुत्वं संयमः-चरक।**'' हीनयोग, अतियोग, मिथ्यायोग पर प्रभुत्व प्राप्त करना ही संयम है। किसी भी इन्द्रिय का हीन योग असंयम और उस पर प्रभुत्व संयम, किसी भी इन्द्रिय का अतियोग असंयम और उस पर प्रभुत्व संयमः, और किसी इन्द्रिय का मिथ्यायोग असंयम और उस पर प्रभुत्व संयम कहाता है।

इस बात को एक उदाहरण से समझा जा सकता है। आहार के सम्बन्ध में अभक्ष्य मांसादि पदार्थों का सेवन हीनयोग है। भूख से अधिक खा लेना अतियोग है। (बाह्य इन्द्रियों को बलात् रोककर) मन के वशीभूत होकर असेवनीय भोजन की कामना करना मिथ्यायोग है। इसी कसौटी पर सभी इन्द्रियों को परखा जा सकता है। यदि किसी व्यक्ति को वैद्य ने मीठा खाने का निषेध किया है और रोगी (मीठा न खाकर उस जगह) खजूर, केला, चीकू जैसी चीजों का सेवन करता है, तो यह हीनयोग होगा, कुछ सेवन की छूट होने पर मर्यादा से अधिक खाना अतियोग, और सर्वथा जिह्वा पर रोक लगाकर मन-ही-मन उसकी कामना करते रहना, मीठे के हर पहलू पर सोचते रहना, उसका रस बने रहना, अर्थात् इस प्रकार सोचना कि जिह्वा से लार टपकने लगे यह मिथ्यायोग है।

इसी प्रकार आंखों से सर्वत्र, प्राणीमात्र को आत्मवत् देखना योग (स्वात्मवत् न बरतकर) अनात्मवत् बरतना हीनयोग। इसी आत्मवत् दर्शन को सर्पादि हानिकर शत्रुओं में बरतना अतियोग और ऊपर से दिखाने के लिए आत्मवादी और मन से अनात्मवादी होना मिथ्यायोग है। कानों से अश्लील सुनना हीनयोग, रात-दिन सुनना अतियोग, कान बन्द करके भी अश्लील गानों पर विचार करना मिथ्यायोग। इसी प्रकार त्वचा से निषिद्ध स्पर्श मनसा-चिन्तन मिथ्यायोग है। यही नासिका से गन्ध के बारे में हीनातिमिथ्यायोग है। वाणी द्वारा (सत्य परन्तु कठोर अथवा अशिष्ट भाषण) गाली देना हीनयोग, बहुत बोलना अतियोग और विपरीत भाषण मिथ्यायोग, अथवा ऊपर से तो मौन परन्तु मन ही मन में कुढ़ते रहना मिथ्यायोग है।

यही विचार कर्मेन्द्रियों द्वारा है। इसी प्रकार अन्तःकरण-वृत्तियों द्वारा हीनातिमिथ्यायोग पर प्रभुत्व संयम कहलाता है। सुनना चाहिए, परन्तु हीनातिमिथ्या श्रवण न करके सुनना योग्य है। चखना चाहिए, परन्तु हीनातिमिथ्या रसन करके चखना योग है। अर्थात् स्वाध्याय से व्यक्ति इन्द्रियजित्, इन्द्रियनिग्रही और इन्द्रियसंयमी हो जाता है, अपनी इन्द्रियों का स्वामी, उनका राजा इन्द्र बन जाता है **इन्द्रियसंयमो भवति।**

7. एकारामता भवतिः- स्वाध्याय से होने वाले लाभों में सातवां लाभ लिखा है-एकारामता भवति स्वाध्यायशील व्यक्ति को एकारामता प्राप्त होती है। उसे ऐसा आराम प्राप्त होता है जो अद्वितीय हो, जिसकी उपमा न हो, जिसका सानी ढूंढे न मिल सके-ऐसे आराम को एकारामता कहते हैं। आश्रम का फल आराम है और वह भी एकाराम तब समझना चाहिए कि जब व्यक्ति का श्रम सफल हुआ। वैदिक धर्मी के लिए आराम का उतना महत्त्व नहीं जितना कि आश्रम का महत्त्व है। आश्रम पालन उसका कर्त्तव्य है, आराम की उपलब्धि उसे स्वतः है। वह भी न केवल आराम की, अपितु एकाराम की। श्रम और राम से पहले जुड़े आङ् उपसर्ग ने इनके महत्त्व को सहस्रगुणित कर दिया है। श्रम तो हो, परन्तु पूर्ण श्रम हो। सब ओर से श्रम हो, आश्रम हो। श्रमिक व्यक्ति का प्रत्येक अंग उसमें जुटा हो, उसी अवस्था में श्रम आश्रम कहलाएगा। यदि श्रम में व्यक्ति का हाथ उठे किन्तु मन भारी हो तो समझना चाहिए कि यह आश्रम नहीं। तब परिपूर्ण राम-आराम की कल्पना व्यर्थ है, हां, यदि सब ओर से सुख चाहते हो, आराम चाहते हो तो आ-श्रम करो। इसलिए याज्ञवल्क्य कहते हैं कि निरन्तर स्वाध्याय का फल एकारामता होता है।

आराम शब्द का अर्थ समझने से पहले विराम और उपराम शब्दों की भावना को हृदयगत कर लेना चाहिए। विराम उस चिन्ह को कहते हैं जहां रूक जाना हो, उससे आगे कुछ न हो। परन्तु आराम उस अवस्था को कहते हैं, जिसमें व्यक्ति का हर अंग रम जाए, उसमें इतना मस्त हो जाए कि किसी दूसरी ओर ध्यान भी न जाए। सांसारिक लोग इसे भले ही आराम कहें, हम ऐसी स्थिति को एकाराम न कह सकेंगे, जिससे मन उपराम होकर किसी अन्य स्थिति में आराम अनुभव करे। पहली अवस्था से उपराम हो जाए, खिन्न हो जाए और दूसरे की तलाश बनी रहे तो वह एकाराम-अवस्था नहीं।

हम सांसारिक सुखों में से एक का उदाहरण ले सकते हैं। नींद को समाधि के तुल्य माना गया है। परन्तु इससे भी मन उचाट हो जाता है, और व्यक्ति तब जागरण को पसन्द करने लगता है। यह एकावस्था नहीं एकारामता नहीं। व्यक्ति एक करवट से लेटा हो तो यह एकारामता नहीं कहलाएगी। एकारामता उस अवस्था का नाम है, जिसमें व्यक्ति एक से उपराम होकर अन्य की कामना न करे।

(क्रमशः)

सम्पादकीय......

हिन्दी दिवस पर हमारा कर्त्तव्य

14 सितम्बर 1949 के दिन भारत की संविधान सभा ने हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार किया। स्वाधीनता के संघर्ष के समय हिन्दी के प्रचार को स्वराज्य प्राप्ति के समान ही महत्त्व दिया जाता रहा था और सभी स्वाधीन देश अपना राजकाज अपनी देश की भाषा में करते हैं। इसलिए 14 सितम्बर को संविधान का निर्णय राष्ट्र की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण था। इस महत्त्व के कारण इस दिवस को देश भर में विभिन्न संस्थाएं हिन्दी दिवस के रूप में मनाती हैं।

हिन्दी दिवस के अवसर पर हिन्दी के महत्त्व को दोहराना अनुचित बात नहीं किन्तु केवल इतना करना भी पर्याप्त नहीं। यह बात निर्विवाद सत्य है कि देश की जनता को एकता के सूत्र में बांधने के लिए देश को एक राष्ट्र भाषा की आवश्यकता है। उस रूप में हिन्दी के महत्त्व को वर्षों पूर्व स्वीकार किया जा चुका है। हिन्दी दिवस के अवसर पर प्रतिवर्ष इस बात का लेखा जोखा होना चाहिए कि पिछले वर्ष हिन्दी को समृद्ध बनाने और हिन्दी को व्यवहार में लाने के लिए क्या प्रयास किए, उसमें कितनी सफलता मिली और अगले वर्ष के लिए किस दिशा में कितने प्रयास की आवश्यकता है।

आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने 1875 के आर्य समाज की स्थापना बम्बई में की थी। महर्षि दयानन्द जन्मना गुजराती थे और उनकी सारी शिक्षा दीक्षा संस्कृत में हुई थी। आरम्भ में महर्षि संस्कृत में ही भाषण और लेखन कार्य किया करते थे। प्रचार के लिए जब कलकत्ता पधारे तो वहां भी संस्कृत में ही भाषण दिए जिसका अनुवाद दूसरे विद्वान् किया करते थे। बाबू केशवचन्द्र सेन की प्रेरणा से महर्षि दयानन्द ने यह अनुभव किया कि साधारण जनता तक अपने विचार पहुंचाने के लिए हिन्दी भाषा को अपनाना चाहिए। अपने भाषणों का अनुवाद करने वालों की होशियारी का जब महर्षि को पता चला तो हिन्दी अपनाने की भावना और भी मजबूत हुई। इसके पश्चात भारतीय जनता की एकता की दृष्टि से महर्षि ने हिन्दी भाषा को अपनाया और अपने सारे ग्रन्थ हिन्दी और संस्कृत में लिखे। महर्षि की इन भावनाओं और देश की एकता का ध्यान रखते हुए आर्य समाज ने हिन्दी भाषा के प्रचार प्रसार का भरपूर प्रयास किया। न केवल अपने मौखिक प्रचार, लेखन कार्य, पत्र–पत्रिकाओं और दूसरे साहित्य के माध्यम से हिन्दी को हर प्रकार से बढ़ावा दिया। इस प्रकार अपने पिछले इतिहास में आर्य समाज हिन्दी भाषा के प्रचारक, सहायक और संरक्षक के रूप में सामने आया।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने देश की स्वतन्त्रता और उत्थान के लिए जो अनेक रचनात्मक कार्यक्रम प्रारम्भ किए, उसमें हिन्दी का प्रचार–प्रसार और प्रयोग भी अनिवार्य था। उन्होंने हिन्दी का प्रचार करने वाली तत्कालीन संस्थाओं को तो सुदृढ़ बनाने का काम किया ही परन्तु साथ ही दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, राष्ट्र भाषा प्रचार समिति, वर्धा जैसी संस्थाओं की स्थापना भी की और इसके माध्यम से तथाकथित अहिन्दीभाषी क्षेत्र में हिन्दी के प्रचार का व्यापक अभियान चलाया। गांधी जी का मानना था कि अंग्रेजों ने नहीं बल्कि अंग्रेजी जानने वाले भारतीयों ने भारत को गुलाम बनाया है।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का मानना था कि राष्ट्रभाषा या राजभाषा वही भाषा बन सकती है जिसमें निम्नलिखित गुण हों– जिसे देश के अधिकांश निवासी समझते हों, वह सरल हो, वह क्षणिक या अस्थाई हितों को ध्यान में रखकर न चुनी गई हो, उसके द्वारा देश का परस्पर धार्मिक, आर्थिक और राजनीतिक व्यवहार सम्भव हो सके और सरकारी कर्मचारी उसे सरलता से सीख सके। गांधी जी का दृढ़ विश्वास था कि समस्त भारतीय भाषाओं में केवल हिन्दी ही ऐसी भाषा है जिसमें उपर्युक्त सभी गुण विद्यमान हैं।

हिन्दी दिवस के अवसर पर जहां विविध प्रकार के कार्यक्रम आयोजित हों, वहां शासकीय, शैक्षणिक, व्यापारिक क्षेत्रों में हिन्दी के अधिक प्रयोग के विषय में चर्चा अनिवार्य रूप से होनी चाहिए। तभी उस दिन की सार्थकता है। इन चर्चाओं के आधार पर अगले वर्ष के लिए ठोस एवं क्रमबद्ध कार्यक्रम भी बनाएं जाने चाहिए। आज हम हिन्दी दिवस के अवसर पर कार्यकम आयोजित करते हैं, वक्ता हिन्दी के महत्त्व पर प्रकाश ड़ालते हैं परन्तु व्यवहार में परिणाम शून्य है। लोग अपने घरों के बाहर नेमप्लेट अंग्रेजी में लगाते हैं, विवाह आदि कार्यक्रमों के निमन्त्रण पत्र अंग्रेजी में छपवाते हैं, अंग्रेजी बोलने में गौरव अनुभव करते हैं। हिन्दी भाषा का प्रचार तब तक सम्भव नहीं है जब तक हम अपने व्यवहार में हिन्दी को नहीं अपनाते। केवल साल में एक बार हिन्दी दिवस मना लेने से हिन्दी का प्रचार नहीं होगा। जिस स्वाधीनता संग्राम को भारतीय भाषाओं ने लड़ा, स्वाधीनता मिलते ही उन्हें दरकिनार कर दिया गया। स्वाधीनता के सारे दस्तावेज ही न केवल अंग्रेजी में हस्ताक्षरित किए गए, बल्कि आधी रात को देश के प्रथम प्रधानमन्त्री ने स्वाधीनता प्राप्ति का पहला भाषण ही अंग्रेजी में दिया गया। यही वह क्षण था, जहां से हिन्दी ही नहीं तमाम भारतीय भाषाओं की बिडम्बना शुरू हुई। हमारी हिचकिचाहट हमारी मनोवैज्ञानिक दासता में अंतर्निहित है। उसके ऐतिहासिक और समाजशास्त्रीय कारण उतने नहीं हैं। स्वाधीनता के पश्चात हिन्दी को राष्ट्रभाषा का दर्जा तो दे दिया गया परन्तु बोल–चाल, व्यवहार और काम–काज में उसे महत्त्व नहीं दिया गया। वर्तमान समय की केन्द्र सरकार ने जब हिन्दी को महत्त्व दिया और मन्त्रालय के सभी कार्यों को हिन्दी में करने का निर्देश दिया तो उसका भी कई लोगों ने विरोध किया। प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने अपने सभी विदेशी दौरों पर हिन्दी में भाषण देकर एक आदर्श प्रस्तुत किया है जिसे हमें स्वयं भी अपनाना चाहिए।

14 सितम्बर को हिन्दी दिवस मनाते हुए हम यह संकल्प करें कि हम अपने सभी कार्यों में हिन्दी को प्राथमिकता देंगे। बच्चों के मुण्डन, विवाह आदि के निमन्त्रण पत्र हिन्दी में छपवाएंगे। हमारे घरों के बाहर नेमप्लेट हिन्दी में होगी। केवल हिन्दी दिवस मना लेने से हम कर्त्तव्य को पूर्ण नहीं कर सकते। जब से हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार किया गया है तभी से हम हिन्दी दिवस मनाते चले आ रहे हैं परन्तु क्या हिन्दी को वह सम्मान और स्थान प्राप्त है जो उसे राष्ट्रभाषा के रूप में मिलना चाहिए था। अगर हमें वास्तव में अपनी मातृभाषा, राष्ट्रभाषा हिन्दी से प्रेम है तो हमें उसके उत्थान के लिए रचनात्मक और ठोस कार्य करना होगा जिससे हम हिन्दी को उसका गौरव प्रदान कर सके।

-प्रेम भारद्वाज
संपादक एवं सभा महामन्त्री

सुशान्तिर्भवतु

-ले० पं० वेद प्रकाश शास्त्री, 4E कैलाशनगर फाजिल्का

ओ३म् द्यौ: शान्तिरन्तरिक्षꣳ शान्ति: पृथिवी शान्तिराप: शान्तिरोषधय: शान्ति:। वनस्पतय: शान्ति र्विश्वेदेवा: शान्तिर्ब्रह्म शान्ति: सर्वꣳशान्ति: शान्तिरेव शान्ति: सा मा शान्तिरेधि॥ -यजु० 36/17

ओ३म् शान्ति: शान्ति: शान्ति:॥

(द्यौ:) द्युलोक अर्थात् प्रकाशमान सूर्यादिलोक (शान्ति:) शान्तिमय हों। (अन्तरिक्षम्) सूर्य और पृथिवी का मध्यवर्ती भाग आकाश (शान्ति:) शान्तिप्रद हो। (पृथिवी) पार्थिव जगत् अर्थात् भूलोक (शान्ति:) शान्ति प्रदान करे। (आप:) जल, प्राण (शान्ति:) शान्तिदायक हों। (ओषधय:) रोगनाशक ओषधियां (शान्ति:) शान्तिदायक हों। (ब्रह्म) जप-स्वाध्याय, वेदविद्या अर्थात् आध्यात्मिक एवं सांसारिक ज्ञान (शान्ति:) शान्तिप्रद हो। (सर्वम्) संसार के सभी पदार्थ (शान्ति:) शान्तिकारक, निरूपद्रव तथा सुखदायक हों। (शान्ति:) स्वयं शान्ति की भावना भी (शान्ति: एव) वस्तुत: शान्तिप्रदायक हो। (सा) वही (शान्ति:) आह्लादित करने वाली शान्ति (मा) मुझे भी (एधि) प्राप्त हो।

(ओ३म्) हे सर्वरक्षक जगदीश्वर! (शान्ति:) आध्यात्मिक (शान्ति:) अधिभौतिक और (शान्ति:) अधिदैविक इन तीनों प्रकार के दु:खों, तापों से मुक्त करके हमें शान्ति प्रदान करें।

शान्ति विस्तार-हे प्रभो! तीनों लोक अर्थात् द्युलोक, अन्तरिक्ष लोक और पृथिवी (पार्थिव) लोक हमें शान्ति प्रदान करें। हमारे शरीर में विद्यमान तीनों लोक-पहला प्रकाशमय, ज्ञानमय रूप में आत्मिक लोक, दूसरा मनोमय मानसिक रूप में अन्तरिक्ष लोक और तीसरा शारीरिक अर्थात् स्थूल, अन्नमय पार्थिव लोक हमें शान्ति प्रदान करें। ये सब 'आप:' जल एवं रस दिव्य रूप के लिए शान्तिदायक हों। ये सोमलता आदि ओषधियां रोगों का शमन करती हुई शरीर के लिए शान्तिकारक हों। सभी प्रकार की वृक्ष, लता आदि भोज्य वनस्पतियां हमारे शरीर के लिए सम्यक् प्रकारेण पोषण प्रदान कर शान्तिप्रद सिद्ध हों। तीनों लोकों के देव अर्थात् चेतन देव = माता, पिता, आचार्य, विद्वज्जनादि तथा जड़ देव = सूर्य, चन्द्रादि सभी के सभी हमारे लिए शान्तिकारक हों। यह शान्ति भी वस्तुत: शान्तिप्रद हो। झूठी या बनावटी शान्ति न हो। भगवान्! निर्जीवता वाली शान्ति भी हमें नहीं चाहिए। अशान्ति को छिपाने के लिए दिखावटी शान्ति की भी हमें आवश्यकता नहीं। हे शान्तिप्रदाता जगदीश्वर! हमें तो वह यथार्थ शान्ति प्रदान कीजिए जो वस्तुत: शान्ति हो।

शान्तिचिन्तन-प्रस्तुत वेदमन्त्र में 11 उपवाक्य हैं जो अपने आप में पूर्ण हैं। यथा-द्यौ: शान्ति:। इसी प्रकार अन्य जानने चाहिए। 10 उपवाक्यों में पूर्णत: शान्ति विद्यमान है। केवल अन्तिम ग्याहरवां उपवाक्य-"सा मा शान्तिरेधि। अर्थ की दृष्टि से स्वयं अपने में पूर्ण नहीं है। उसकी पूर्ति के लिए अन्य वाक्य/वाक्यों की आवश्यकता है।'सा' वह शान्ति। कौन सी शान्ति ? इसका उत्तर है-जो उपर्युक्त दस उपवाक्यों में वर्णित है, वह शान्ति मुझे प्राप्त कराइए।

वस्तुत: इस संसार में तीन प्रकार के दु:ख हैं।

1. आध्यात्मिक-जो हमारे आत्मा, शरीर में अविद्या, राग, द्वेष, काम, क्रोध, लोभ, मोह, शंका, भ्रान्ति, व्याधि, मूर्खता और ज्वर पीड़ा आदि अन्दर से उत्पन्न होते हैं।

2. आधिभौतिक-वे दु:ख जो हमें दूसरे मनुष्यों या प्राणियों से प्राप्त होते हैं। जैसे-चोर हमारा माल चुरा ले जाता है। डाकू हमें मारने का यत्न करता है। शत्रु आक्रमण के ताक में रहता है। घर में पुत्र बगावत कर देता है। शेर, चीते आदि हमें खाने के लिए तत्पर रहते हैं। सर्प डस लेता है चूहे फसलें खा जाते हैं जिससे मनुष्यों को दु:ख होता है।

3. आधिदैविक-जो जड़ जगत् के पदार्थों से प्राप्त होते हैं। यथा-आग लगना, भूकम्प आना, अतिवृष्टि, अनावृष्टि, अतिशीत, अतिउष्णता, भूस्खलन, औले गिरना आदि प्राकृतिक आपदाएं।

दैहिक दैविक भौतिक तापा॥

इन तीनों प्रकार के तापों से सन्तप्त होकर मनुष्य आहें भरने लगता है। इस असहाय अवस्था में उसके मुंह से यही निकलता है-

ओ३म् शान्ति: शान्ति: शान्ति:॥

हे भगवान्! हमें तीनों प्रकार के तापों से मुक्त करके शान्ति प्रदान करो।

मनुष्य अविद्या के कारण वहां शान्ति खोजता है जहां शान्ति है ही नहीं। क्या शराब पीने से अशान्ति दूर हो जाएगी ? नहीं, वस्तुत: वह अपनी अशान्ति बढ़ाता है, कम नहीं करता। तभी महात्मा तुलसीदास कहते हैं-

ग्रह ग्रहीत पुनि वात बस, ताहि पुनि बीछी मार।

ताहि पियाहि वारूणी, कहहु काह यह उपचार॥

सुशान्ति:-आधुनिक परिस्थितियों के परिप्रेक्ष्य में यद्यपि उपर्युक्त वेद मन्त्र में वर्णित सभी पदार्थों में प्राचीनकाल में शान्ति विद्यमान थी जिससे जनमानस में भी शान्ति थी। परन्तु आज सर्वत्र अशान्ति है। क्योंकि वर्तमान काल में मानव के विभिन्न परमाण्विक आविष्कारों, परीक्षणों, अत्याधुनिक विनाशक मिसाइल सदृश अस्त्रों से लेकर दैनिक प्रभोज्य वस्तुओं के प्रदूषण ने अन्तरिक्ष अर्थात् आकाश मण्डल में अशान्ति उत्पन्न कर दी है। ओजोन परत के छिद्र का बढ़ते जाना अत्याधिक चिन्तनीय है। विभिन्न ग्रहों पर अन्वेषणीय यानों का जाना, असफल होने पर अन्तरिक्ष में ही नष्ट होकर उसे प्रदूषण से प्रभावित करना भी अशान्ति का कारण है। अन्तरिक्ष में स्टेशन एवं आवासीय कालोनियों की स्थापना की अवधारणा भी तो अशान्ति का ही कारण होगी। अन्तरिक्षयानों द्वारा उत्सर्जित गैसें भी तो अन्तरिक्ष को प्रदूषित एवं अशान्त करने का कारण हैं।

भूमि पर विद्यमान जल, औषधियां, वनस्पतियां सभी प्रदूषित होने के कारण स्वयं अशान्त हैं और अशान्ति का कारण बन रही हैं। खाद्य वस्तुओं की अधिक उपज प्राप्त करने हेतु कीटनाशकों के प्रयोग ने उपज में भले ही वृद्धि कर दी हो परन्तु मनुष्य एवं अन्य जीव-जन्तुओं के लिए उत्तरोत्तर विनाशक तथा अशान्तकारक ही सिद्ध हो रहा है। स्वस्थ्य की दृष्टि से अशान्ति का कारण है।

यहां तक कि धरती का अन्त: करण भी अशान्त है। असीमित जलदोहन, खनिजों का अंधाधुंध उत्खनन, परमाणु विस्फोट, वांछित-अवांछित वैज्ञानिक प्रयोगों ने भी धरती का हृदयविदारण किया है। पर्वतों को विस्फोटों से उड़ा कर सुरंगों एवं अन्य आवश्यक निर्माण, पर्वतीय क्षेत्रों में गैरपारम्परिक अवैध निर्माण, वनों की कटाई, औषधियों-वनस्पतियों का विनाश, भूचाल, भूस्खलन, अतिवृष्टि, अनावृष्टि, बाढ़ और सूखा, विभिन्न सयन्त्रों, कलकारखानों आदि से उत्सर्जित विषाक्त गैसों के सदृश अन्य अनेक आपदाओं में धरती की शान्ति को निगल लिया है। अब तो चहुंदिशि अशान्ति का ही साम्राज्य है।'त्राहिमाम् त्राहिमाम्' का सर्वत्र बोलबाला है। यह अशान्ति समस्त विश्व के लिए चिन्ता का विषय है जो अति चिन्तनीय है। यहां तक कि समुद्र भी अशान्त है। जल-जीवों का जीवन खतरे में है। अनेक जलीय जातियां-प्रजातियां समाप्ति के कगार पर हैं। फिर शान्ति कहां?

आज का हाल तो यह है कि पहले समस्याएं उत्पन्न करो और फिर उनके समाधान के लिए राष्ट्रीय स्तर, विश्व स्तर पर मीटिंगें करो। जांच कमेटियां बनाकर कारण और निदान ढूंढते रहो। समाधान कब होगा ? कहा नहीं जा सकता ? प्रतीक्षा कीजिए अगली मीटिंग की। तब तक और भी समस्याएं एकत्र हो जाने दीजिए फिर एक साथ ही विचार-विमर्श और समाधान करेंगे। अभी जल्दी भी क्या है ? बस, नए-नए प्रयोग करते रहिए। स्थिति इतनी गम्भीर है कि आज शान्ति स्वयं ही शान्ति की भिक्षा मांग रही है। अरे शान्ति तू भी बोल-

ओ३म् शान्ति: शान्ति: शान्ति:॥

आर्य समाज शहीद भगत सिंह नगर में हिन्दी दिवस मनाया

आर्य समाज शहीद भगत सिंह नगर में साप्ताहिक यज्ञ का आयोजन किया गया जिसमें ब्र. शिवा जी ने पवित्र वेद मन्त्रों से यज्ञ सम्पन्न करवाया। सोनू भारती जी ने ईश्वर भक्ति के भजन सुनाकर सभी को मन्त्रमुग्ध कर दिया। आर्य समाज के मन्त्री रणजीत आर्य ने कहा कि हिन्दी हमारी राष्ट्रीय भाषा है इसको 14 सितम्बर 1949 को राष्ट्र भाषा का दर्जा दिया गया। हिन्दी भाषा ही ऐसी भाषा है जो पूरे राष्ट्र का सम्मान है। स्वामी दयानन्द जी ने स्वयं गुजराती होते हुए भी हिन्दी भाषा को ही मान्यता दी और अनेक ग्रन्थ जैसे सत्यार्थ प्रकाश व अन्य ग्रन्थ हिन्दी में लिखे। हिन्दी भाषा हमारी एकता की प्रतीक है, हिन्दी भारत की राष्ट्र भाषा है, हिन्दी भारत की सम्पर्क भाषा है, हिन्दी एक सरल भाषा है। आज हमें गर्व है कि भारत के प्रधानमन्त्री नरेद्र मोदी जी भी हिन्दी के दीवाने हैं। इस अवसर पर श्री अश्विनी ड़ोगरा जी ने भी एक कविता सुनाकर हिन्दी हैं हम हिन्दोस्तान हमारा। हमारे पूर्वजों ने हिन्दी की रक्षा के लिए जो कुर्बानियां दी हैं उन्हें भुलाया नहीं जा सकता। हिन्दी एक राष्ट्रीय भाषा है। इस कार्यक्रम में सुभाष आर्य, ओम प्रकाश मैहता, भूपेन्द्र उपाध्याय, दीपक अग्रवाल, राजीव शर्मा, चौ. हरीचन्द, हर्ष लखनपाल, सुदर्शन आर्य, अनिल मिश्रा, विनोद तिवारी, तिलक राज, मोहन लाल, राजेन्द्र शर्मा, पूनम मैहता, अनु आर्य, इन्दु आर्य, रमा शर्मा, संगीता तिवारी, संगीता मल्होत्रा, अर्चना मिश्रा, उमा शुक्ला, बैज नाथ, पूनम शर्मा, सुभाष भगत आदि उपस्थित थे। **-रणजीत आर्य मन्त्री आर्य समाज**

यज्ञ का एक वैज्ञानिक विश्लेषण

-ले० श्री डा. सहदेव वर्मा

यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म

भारत में जब से यज्ञ का नियमित प्रचलन समाप्त सा हुआ है, तब से देश अभावों, कष्टों व अनेक दैवी आपदाओं से ग्रस्त है। कहीं अति वृष्टि, कहीं सूखा, कहीं महामारियां, कहीं मानसिक आधि व्याधियां देशवासियों को आक्रान्त कर रही हैं। शारीरिक सुख के बाहरी साधन तो बढ़ रहे हैं, भौतिक सम्पदा की तो भरमार हो रही है। मानव मात्र आपाधापी में मस्त है पर आत्मिक शान्ति और आनन्द का नाम नहीं।

वायु प्रदूषण की समस्या, अन्न का अभाव, जल का संकट, असन्तोष की आग आज के मानव को बेचैन किए हुए है। विज्ञान के इस युग में मनुष्य भौतिक सुखों की चाह में दो कदम आगे बढ़ता है तो आत्मिक आनन्द के अभाव में चार कदम पिछड़ जाता है।

कदम-कदम पर फैक्टरियों और मिलों की कानफोड़ आवाज, रेलों हवाई जहाजों व बम विस्फोटों की दिल दहलाने वाली गड़गड़ाहट, धरती से आकाश तक चारों तरफ मशीनों, वाहनों तथा आवागमन के असंख्य साधनों द्वारा चौबीसों घण्टों धूल धुआं उड़ाकर जीवित प्राणियों को चैलेंज सा देता हुआ वायवीय विष, भटकती गरीबी, सुरसा के मुंह सरीखी बढ़ती बेरोजगारी, रिकार्ड तोड़ जनसंख्या आदि समस्याएं मुंह बाये प्राणी मात्र को निगलने के लिए तैयार खड़ी हैं।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि भारत स्वतन्त्रता के पश्चात उन्नति के पथ पर अग्रसर हुआ है किन्तु यह गति सन्तोषजनक नहीं कही जा सकती। राजनीतिक दृष्टि से तो राष्ट्र को उन्नत करने की दिशा में ऐड़ी-चोटी तक का जोर लगाया जा रहा है किन्तु चरित्र निर्माण, मानव उत्थान, मानसिक-विकास तथा स्वस्थ राष्ट्र सेवी नागरिक बनाने की ओर किसी राष्ट्र निर्माता का ध्यान आकर्षित नहीं हो रहा है। आज का मानव दूसरे की खोज में तो लगा है। उसने आकाश की ऊंचाई, सागर की गहराई और धरती के विस्तार को तो नाप लिया किन्तु वह अपने को भूल रहा है। यह अतुलित धन सम्पत्ति का स्वामी होना चाहता है। आधुनिक विज्ञान का सहारा लेकर धरती, आकाश और सागर को अधिकार में करना चाहता है। आज की राजनीति भी अराजकता की पर्याय बन चुकी है। विज्ञान विनाश की ओर अग्रसर है। कुर्सी के आकर्षण ने त्याग की भावना सर्वथा शून्य कर दी है। हर व्यक्ति अधिकार हथिया कर दूसरों की सेवा का दम भरता है। कवि की निम्नलिखित उक्ति ऐसे ही व्यक्ति पर चरितार्थ होती है-

पद-लोलुपता और त्याग का,
एकाकार नहीं हो सकता।
दो नावों पर पग रखने से,
सागर पार नहीं हो सकता।

आखिर यह सब क्यों हो रहा है ? इसलिए कि देश से वे सन्तुलित कल्याणकारी परम्पराएं लुप्त हो गई जो त्याग, सेवा व उपकार का पाठ सिखाती थी। जिनमें यज्ञ की प्रथा सबसे महत्त्वपूर्ण व मानवोपयोगी थी और आज भी है। न जाने हमें क्या हो गया है ? सदियों से परतन्त्रता की पीड़ा सहन करने पर भी हमें अपनी अज्ञानता का ज्ञान नहीं होता। हम आज भी हलाहल को अमृत और अमृत को विष समझ रहे हैं। वास्तविकता सामने आने पर भी हम अनजान से बन जाते हैं। पर यह भली-भान्ति समझ लेना चाहिए कि जब तक हम उन महान् परम्पराओं को नहीं अपनाते जिन के कारण भारत जगद्गुरू कहलाता था तब तक राष्ट्र का वास्तविक उत्थान नहीं हो सकता।

उन महती परम्पराओं में सर्वाधिक उपयोगी एवं कल्याणकारी तथा प्राणीमात्र की उद्धारक है-'यज्ञ-परम्परा है। यज्ञ क्या है-'

यह शब्द के भीतर छिपी भावना इतनी गहन तथा विस्तृत है कि इस पर विशाल ग्रन्थ लिखा जा सकता है। यज्ञ की इसी पुनीत गम्भीर भावना को लेकर इस लघु लेख में कुछ विचार प्रकट किए गए हैं।

ऋषि दयानन्द सरस्वती ने सत्यार्थ प्रकाश के तीसरे समुल्लास में लिखा है-जब तक होम करने का प्रचार रहा तब तक आर्यावर्त देश रोगों से रहित और सुखों से पूरित था। अब भी प्रचार हो तो वैसा ही हो जाए। इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि रोग नाशक तथा सुखों का कारक यज्ञ कितना लोकोपकारी है।

यज्ञ को अग्निहोत्र, होम, हवन, योग, यज्ञ आदि नामों से भी पुकारा जाता है। सामान्यता मन्त्रोच्चारण के साथ भी सामग्री व सुगन्धित पदार्थों की आहुति देकर यह क्रिया सम्पन्न की जाती है। इससे समस्त वातावरण सुगन्धित एवं पावन हो उठता है। इसका सीधा प्रभाव स्वास्थ्य तथा मन पर भी पड़ता है। वायुमण्डल मोहक एवं स्वास्थ्यप्रद हो जाता है। अनेक असाध्य रोगों पर यज्ञ का सीधा तथा प्रभावोत्पादक परिणाम देखने में आता है, यज्ञ करना प्रत्येक मनुष्य के लिए आवश्यक है। यदि हर घर में यह प्रक्रिया प्रचलित हो जाए तो समस्त विश्व में सुख शान्ति, अरोग्य तथा आनन्द का वातावरण हो सकता है।

यह बात भी समझ लेनी चाहिए कि 'यज्ञ' का अर्थ केवल अग्नि में आहुति देना ही नहीं है, यद्यपि यह उसका प्रमुख रूप है। शतपथ ब्राह्मणकार कहते हैं-यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म अर्थात् प्रत्येक श्रेष्ठ कार्य ही यज्ञ है। इस दृष्टि से सेवा, परोपकार, सत्य दान आदि भी यज्ञ में ही सम्मिलित हैं।

यज्ञ शब्द 'यज' धातु से बना है, जिसका अर्थ है देवपूजा, संगतिकरण और दान। सर्व प्रथम इसी अर्थ पर विचार करना उचित होगा।

देव-पूजा क्या है ? देव शब्द का अर्थ है दिव्य गुणों से युक्त अथवा जिसमें विशेष गुण हों। इस दृष्टि से देव दो प्रकार के हुए-प्रथम जड़ देवता, दूसरे चेतन देवता। जड़ देवता उसे कहते हैं जिसमें गुण विशेष तो हों शक्ति तो हो परन्तु उन गुणों अथवा शक्ति का वे स्वेच्छा से उपयोग न कर सकें क्योंकि जड़ वस्तु में गुण तथा शक्ति होते हुए भी इच्छा नहीं होती, अतः वे जान-बूझकर किसी का न कुछ बिगाड़ सकती है न कुछ बना सकती है। यह बुद्धिमान मनुष्यों पर निर्भर करता है कि इनका उपयोग और लाभ किस प्रकार प्राप्त करें। सूर्य, चन्द्र, अग्नि, जल, वायु, पृथिवी के साथ-साथ प्रायः सभी वृक्ष वनस्पतियां तथा इनमें भी तुलसी, पीपल, नीम, चन्दन आदि मानव जीवन की उपयोगिता की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण जड़ देवता माने जा सकते हैं।

सभी जानते हैं कि सूर्य, अग्नि, वायु, जल आदि में दिव्य शक्ति है। किन्तु इस का सदुपयोग करना, विचारपूर्वक इनका लाभ उठाना मनुष्य का काम है। सूर्य से धूप से वनादि, अग्नि से भोजनादि, जल से पिपासा शान्ति न शरीर शुद्धि के साथ-साथ कृषि सिंचाई विद्युत निर्माण जैसे यथोचित रूप में उपयोग किए जा सकते हैं। इनके गुणों व शक्ति को व्यर्थ न जाने देना, आवश्यकतानुसार उनका सेवन करना, समय एवं परिस्थिति के अनुसार इनका रक्षण करना नीम तुलसी आदि वृक्षों व पौधों का औषध आदि के रूप में सदुपयोग करना, इनका पूरा-पूरा लाभ उठाना, गर्मी-सर्दी से इनकी सुरक्षा, खाद पानी आदि से इनका पोषण कर फल-फूल, छाल, पत्तियों आदि का पूरा-पूरा लाभ उठाना, यही इन जड़ देवताओं की पूजा है। सूर्य, चन्द्र, तुलसी, पीपल, नीम, नदी, तालाब आदि के सामने हाथ जोड़कर खड़े होना, सिर झुकाना, रोली चावल चन्दन का टीका करना, जल चढ़ाना इन की उचित पूजा नहीं, वरन् इनकी सुरक्षा का यथा योग्य प्रबन्ध कर जीवन को लाभान्वित करना ही जड़ देवताओं की सच्ची पूजा है इस रूप में यही यज्ञ है।

(शेष पृष्ठ 6 पर)

यज्ञ का सार-आत्मिक व भौतिक लाभ

-ले० पं० उम्मेद सिंह विशारद वैदिक प्रचारक उत्तराखण्ड, गढ़निवास मोहकमपुर, देहरादून

यज्ञ-यह एक अद्‌भुत शब्द है। इस शब्द में जो विचार भरा है, वह ऐसा विलक्षण विचार है, जो संसार को किसी विचारधारा में नहीं पाया जाता है। यज्ञ शब्द का अर्थ यह भौतिक या बाह्य यज्ञ नहीं है। इसका अर्थ आध्यात्मिक एवं आन्तरिक यज्ञ है।

याजिक को व्यक्तिगत, पारिवारिक व सामाजिक, भौतिक लाभ पीछे स्वयं में प्राप्त होने लगते हैं। बाहरी यज्ञ तो प्रतीक मात्र पर्यावरण शुद्धि वेद मंत्रों की रक्षा एवं सात्विक वृत्ति द्वारा धर्म को स्थिर रखने का उपक्रम मात्र है। इससे ईश्वर की प्राप्ति नहीं होती है। वास्तविक फलदायक यज्ञ तो वह होता है जो मन के भीतर हो रहा है। असली यज्ञ भीतर होना चाहिए तथा बाहर व भीतर के यज्ञ में एक रूपता होनी चाहिए।

यजुर्वेद में लिखा है कि यज्ञेन यज्ञं अयजन्त देवा: अर्थात् विद्वान लोग यज्ञ से यज्ञ को उत्पन्न करते हैं। बाहर के यज्ञ में आग की लपटें उठ रही हैं। हमारे भीतर भी ऊपर उठने की लपट पैदा हो। हमारे भीतर आत्मिक ज्योति का प्रकाश हो। हमारे भीतर भी कितना ही हमें पतन की तरफ ले जाने का यत्न करें, हम पतन के मार्ग का अवलम्बन न करें। बाहर हो रहा यज्ञ और भीतर भी वही यज्ञ होना चाहिए।

यज्ञ सिर्फ हवन करने का नाम नहीं है। यह सृष्टि चक्र को श्रेय की कल्याण की तरफ ले जाने का एक मूल सिद्धान्त है। प्राणी मात्र यज्ञ के सिद्धान्त पर चलेंगे तो सबका कल्याण होगा, न चलेंगे तो सृष्टि चक्र बौखला जाएगा। सृष्टि में कहीं शान्ति नहीं मिलेगी। सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के जड़ एवं चेतन तत्व निरन्तर परोपकार यज्ञ कर रहे हैं और सभी तत्त्व एक दूसरे से भिन्न होते हुए भी एक दूसरे के पूरक हैं और सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को स्थिर रखने और सृष्टि क्रम को यथावत् देवत्व देने का यज्ञ कर रहे हैं।

यज्ञ का सार

महाराजा जनक बहुत बड़ा यज्ञ कर रहे थे। उस अवसर पर ऋषि उद्दालक जी ने राजा जनक से निम्न प्रश्न पूछे-

प्रश्न 1. किं स्विद: यज्ञस्य आत्मा ?

उत्तर-स्वाहा यज्ञस्य आत्मा-1

प्रश्न 2. किं स्विद: यज्ञस्य प्राण: ?

उत्तर-न मम यज्ञस्य प्राण:-1

प्रश्न 3. किं स्विद: यज्ञस्य सार: ?

उत्तर-सुरभि यज्ञस्य सार:-1

आइए क्रमश: एक-एक प्रश्न पर विचार करते हैं-

1. किं स्विद: यज्ञस्य आत्मा-यज्ञ की आत्मा स्वाहा है और स्वाहा का प्रयोग वैयक्तिक, आध्यात्मिक व सामाजिक व्यवहार में निरन्तर किया जाता है। आइए इस पर विचार करते हैं स्वाहा शब्द का व्यवहारिक अर्थ है कि जैसे मनुष्य अपने में सोचता है, वैसा ही व्यवहार करता है।

प्रथम यज्ञ में जो हम आहुति प्रदान करते हैं, वह उस मन्त्र के अर्थ के अनुकूल अपने हृदय से स्वाहा करके डालनी चाहिए तथा संसार में व्यवहारिक जगत में जो हम एक दूसरे से व्यवहार करते हैं वह सात्विक निस्वार्थ परोपकारिक होना चाहिए। प्रत्येक कार्य को परहित भावना में करना चाहिए। सुबह में रात्रि सोने के समय तक जो विचार हम मस्तिष्क से सोचते रहते हैं। अर्थात् शरीर रूपी यज्ञ कुण्ड में विचारों की आहुति देते रहते हैं। वह भी सात्विक व परोपकारिक, द्वेष रहित विचारों की होनी चाहिए। यदि उक्त विचारों से हम सही हैं तो समझिये हमारा यज्ञ शुद्ध हो रहा है। अत: सृष्टि क्रमानुसार ईश्वर जैसे निस्वार्थ भाव से प्रकृति के सभी पदार्थ परोपकार के लिए देते हैं। वैसे ही हम भी संसार में व्यवहार करें। यही स्वाहा का अर्थ सही अर्थों में हो सकता है।

2. कि स्विद: यज्ञस्य प्राण: उत्तर-न मम यज्ञस्य प्राण:-यह संसार अनित्य है, एक क्षण भी स्थिर रहने वाला नहीं है, परन्तु आत्मा सदैव रहने वाला है। जब मनुष्य का असत अर्थात् नाशवान पदार्थ से सम्बन्ध विच्छेद हो जाता है तो वह ब्रही स्थिति होती है। मेरी कुछ नहीं है, इसको स्वीकार करने से मनुष्य निष्काम हो जाता है, निरअहंकार हो जाता है। मैं खाली हाथ संसार से आया था और खाली हाथ ही संसार से जाऊंगा। फिर क्यों मेरा मेरा करें। संग्रह उतना ही करें, जितनी जरूरत है बाकी परोपकारी कार्यों में धन सम्पत्ति लगाना ही यज्ञ का प्राण है।

3. किं स्विद यज्ञस्य सार: उत्तर: सुरभि यज्ञस्य सार:-जब मनुष्य उपर्युक्त भावना से यज्ञ एवं संसार में व्यवहार करता है, तब उसकी लोकप्रियता बढ़ने लगती है। वह मनुष्यों में श्रेष्ठ गिना जाता है, सभी उसका आदर करते हैं। उसकी कीर्ति सर्वत्र फैल जाती है। समाज में उस पर विश्वास करते हैं। उसकी वाणी का आदर करते हैं। समाज उसको आदर्श मान कर चलता है। वह जिस क्षेत्र में कार्य करता है। उसमें आशातीत सफलता निर्भर है। क्या यह छोटी बात है, इससे बढ़कर संसार में और क्या चाहिए।

त्रिविध यज्ञ

सात्विक यज्ञ-फल की आकांक्षाओं को छोड़कर जो यज्ञ किया जाता है वह सात्विक यज्ञ कहलाता है।

राजसिक यज्ञ-फल की इच्छा, वैभव प्रदर्शन, ऐश्वर्य प्रदर्शन के लिए जो यज्ञ किया जाता है, वह राजसिक यज्ञ कहलाता है।

तामसिक यज्ञ-विधि विहीन, वैदिक विहीन, दान रहित, जो यज्ञ किया जाता है, वह तामसिक यज्ञ कहलाता है।

वेद प्रचार सप्ताह सम्पन्न

आर्य समाज मुम्बई (काकड़बाड़ी) वेदोद्धारक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के करकमलों से स्थापित विश्व की प्रथम आर्य समाज है। ईश्वरीय ज्ञान वेदों के उन्नतशील विचारों को जन-जन तक पहुंचाने के लिए ऋषि ने इस संस्था की स्थापना की थी। ऋषि के कार्यों को विगत 139 वर्षों से करते हुए आर्य समाज मुम्बई के द्वारा इस वर्ष भी दिनांक 10 अगस्त 2014 से 17 अगस्त 2014 तक वेद प्रचार सप्ताह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर यजुर्वेद पारायण महायज्ञ एवं संस्कृत रक्षा सम्मेलन व श्री कृष्ण जनमाष्टमी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर अनेक आर्य विद्वानों ने अपने-अपने विचार धर्म, संस्कृत और योगीराज श्रीकृष्ण के सम्बन्ध में रखे। सम्पूर्ण कार्यक्रम सफलता के साथ सम्पन्न हुआ। सभी आर्यजनों का सहयोग इस कार्यक्रम में मिला जिसके कारण यह ऐतिहासिक आर्य समाज निरन्तर उन्नति के पथ पर अग्रसर है। **-महावीर शर्मा मन्त्री आर्य समाज मुम्बई**

पृष्ठ 5 का शेष- यज्ञ का वैज्ञानिक.....

अब चेतन देवताओं को लें। स्पष्ट है कि जिसमें सोच-विचार करने की बुद्धि पूर्वक कार्य कर सन्मार्ग पर चलने चलाने की सेवा, परोपकार आदि सदगुणों में प्रवृत्त हो दूसरी को भी इस ओर प्रवृत्त करने कराने की शक्ति सामर्थ्य और क्षमता हो वही चेतन देवता है। इस दृष्टि से परम पिता परमेश्वर सर्वश्रेष्ठ, अनुपम तथा उपासनीय देवता है।

वह देवों का भी देव है इसलिए उसका एक नाम महादेव भी है। उसकी उपासना स्तुति अवश्य करनी चाहिए। उसके अतिरिक्त भी चेतन देवता है। ये चेतन देवता वे हैं जो अनेक गुणों से युक्त, योग्य, सदाचारी, धार्मिक, विद्वान तथा परोपकारी होते हैं। इनकी विशेषता यह है कि जानबूझकर किसी का सुधार तो कर ही सकते हैं परन्तु रूष्ट होकर बिगाड़ भी सकते हैं। माता-पिता, गुरू, आचार्य, सन्त-महात्मा, सन्यासी, सत्योपदेष्टा धर्म प्रचारक आदि चेतन देवता की कोटि में आते हैं। इनकी सेवा शुश्रुषा नि:स्वार्थ भाव से करनी चाहिए। ये सब यदि प्रसन्न व सन्तुष्ट रहें तो व्यक्ति का, समाज का, राष्ट्र का और अन्ततोगत्वा विश्व का काया पलट हो सकता है कल्याण हो सकता है। किन्तु ये रुष्ट और अप्रसन्न हो जाएं तो जीवन के विनाश का कारण भी बन सकते हैं। अत: इनकी यथायोग्य पूजा, सेवा सत्कार करना ही उचित है यही देव पूजा है। इस प्रकार यह भी यज्ञ ही है।

साधना शिविर का आयोजन

आज से ग्यारह वर्ष पूर्व पूज्य गुरूवर स्वामी सत्यपति जी महाराज ने ऊंची योग्यता वाले दर्शन, व्याकरण आदि के विद्वान् एवं विशेषकर योग में रूचि, श्रद्धा रखने वाले योग जिज्ञासुओं के लिए तीन मास का एक उच्च स्तरीय योग शिविर का आयोजन किया था। उस शिविर का उद्देश्य था शिविरार्थी प्रथम विशुद्ध वैदिक योग विद्या को क्रियात्मक रूप में प्राप्त करें, पुन: समाधि के माध्यम से ईश्वर का स्वयं साक्षात्कार करके अन्यों को भी करावें। शिविर में विद्यालय के वरिष्ठ स्नातक एवं बाहर के अन्य जिज्ञासुओं ने भाग लिया और पर्याप्त आध्यात्मिक लाभ लेकर अपने आपको कृतार्थ किया। उसी के फलस्वरूप बृहती ब्रह्ममेधा नामक पुस्तक भी हमको उपलब्ध हुई जो कि तीन भागों में प्रकाशित उन्नीस सौ पृष्ठों की एक अद्भुत आध्यात्मिक निधि है। इसमें पूज्य गुरूवर स्वामी सत्यपति जी महाराज की अधिकांशत: योगविद्या संगृहित होकर सुरक्षित हो गई है।

इस योग विद्या की श्रृंखला को आगे बढ़ाने के लिए पुन: दर्शन योग महाविद्यालय में एक वर्षीय सघन साधना शिविर का आयोजन किया जा रहा है। यह 1 अक्तूबर 2014 से आरम्भ होकर अगले 30 सितम्बर 2014 को सम्पन्न होगा। इसमें उच्च स्तर के साधक-साधिका मुख्य रूप से भाग लेंगे। शिविर में विशेष रूप से वेद, दर्शन आदि आर्ष ग्रन्थों के आधार पर ध्यान, उपासना का प्रशिक्षण, विवेक-वैराग्य, समाधि की प्राप्ति हेतु निदिध्यासन आदि के रूप में उसके वैज्ञानिक विधि एवं उपायों का परिज्ञान कराया जाएगा। इसके साथ सूक्ष्म व उच्च आध्यात्मिक स्तर की वृद्धि हेतु सम्पूर्ण न्याय दर्शन का अध्ययन भी कराया जाएगा। साधना की समुचित दिनचर्या के साथ मौन का अनुष्ठान विशेष रूप से सम्मिलित रहेगा। आशा है इस शिविर के माध्यम से बुद्धिपूर्वक अभ्यास करने वाले सुशिक्षित वैदिक योग साधक, समाज को प्रेरणा एवं नेतृत्व करने वाले योग प्रशिक्षक एवं आध्यात्मिक विद्या की रक्षा व वृद्धि में जीवन समर्पित करने वाले अध्येता तैयार हो सकेंगे। इसी के साथ विद्यालय में पठन-पाठन के साथ योगाभ्यास का स्तर भी उत्कर्षता को प्राप्त होगा जिससे वैदिक आध्यात्मिक ज्ञान परम्परा निरन्तर फलती-फूलती रहेगी।

-ब्रह्मविदानन्द सरस्वती अध्यक्ष-सघन साधना शिविर

आर्य समाज द्वारा मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे का स्वस्तिवाचन मंत्रोच्चार से किया स्वागत

कोटा में आर्य समाज ज़िला सभा द्वारा राजस्थान की मुख्यमंत्री माननीय श्रीमती वसुंधरा राजे का अभिनन्दन किया गया।

आर्य समाज के ज़िला प्रधान अर्जुन देव चड्ढा की अगवाई में आर्य समाज रामपुरा के प्रधान कैलाश बाहेती, विज्ञाननगर के प्रधान जे. एस. दुबे, तिलक नगर के प्रधान ओमप्रकाश तापड़िया, डी. ए. वी. स्कूल कोटा की प्राचार्या श्रीमती सरिता रंजन गौतम तलवंडी के मंत्री भैरोलाल शर्मा, वेदप्रचार समिति के मंत्री प्रभु सिंह कुशवाह, आर्य विद्वान रामप्रसाद याज्ञिक, शोभाराम आर्य ने रोटरी बिनानी सभागार में आयोजित कार्यक्रम में श्रीमती राजे को केसरिया पगड़ी, गायत्री मंत्र से सुसज्जित केसरिया दुपट्टा, मोतियों की माला व ''ओ३म्'' का स्मृति चिन्ह भेंट कर प्रार्थनामंत्रों का स्वस्तिवाचन मंत्रोच्चारण करते हुए सम्मान किया।

महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा रचित अमरग्रंथ ''सत्यार्थप्रकाश'' भी श्रीमती राजे को आर्य समाज द्वारा भेंट किया गया। आर्य समाज के ज़िला प्रधान अर्जुन देव चड्ढा ने बताया कि महर्षि दयानन्द सरस्वती के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में श्रीमती राजे ने राजस्थान की विभिन्न जेलों में बंद 3500 कैदियों की सजा कम की व 150 कैदियों की सजा माफ कर उन्हें रिहा किया गया। इसी संदर्भ में श्रीमती वसुंधरा राजे का सम्मान आर्य समाज द्वारा किया गया। मंच पर उपस्थित कोटा-बूंदी क्षेत्र के सांसद ओम बिरला ने श्रीमती राजे को बताया कि कोटा में अर्जुन देव चड्ढा के नेतृत्व में आर्य समाज बहुत कार्य कर रहा है। कोटा में समाजसेवा के क्षेत्र में आर्य समाज का महत्त्वपूर्ण योगदान है। सेवा में इनकी लगन व निष्ठा से मैं बहुत प्रभावित हूं। **-रामप्रसाद याज्ञिक**

वेद सप्ताह समारोह

आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार(दाल बाजार) लुधियाना में वेद सप्ताह समारोह 15 सितम्बर 2014 से 21 सितम्बर 2014 रविवार तक बड़ी धूमधाम से मनाया जा रहा है। इस अवसर पर स्वामी यज्ञमुनि जी के प्रवचन तथा पं. घनश्याम प्रेमी भजन मंडली के भजन होंगे। इस अवसर पर चतुर्वेद शतक पारायण यज्ञ किया जाएगा। 21 सितम्बर रविवार को यज्ञ की पूर्णाहुति 11 हवनकुण्डों पर की जाएगी। यज्ञ के ब्रह्मा पुरोहित कर्मवीर शास्त्री जी होंगे। पूर्णाहुति के पश्चात 12:30 बजे तक वेद सम्मेलन होगा जिसकी अध्यक्षता स्वामी शोभानन्द जी करेंगे। इस अवसर पर शहीद तेजपाल साथी मैमोरियल चैरीटेबल ट्रस्ट की ओर से बच्चों को वर्दियां तथा जरूरतमंद लोगों को राशन आदि वितरित किया जाएगा। सभी धर्मप्रेमी सज्जनों से प्रार्थना है कि इस सम्पूर्ण कार्यक्रम में पधार कर धर्म लाभ प्राप्त करें।

-आत्म प्रकाश आर्य प्रधान आर्य समाज

वर चाहिए

ब्रह्मभट्ट ब्राह्मण 31 वर्ष 5' 1", एम. एस. सी. (गणित), प्रोबेसनरी ऑफीसर (डिप्टी मैनेजर) स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, भोपाल (मध्य प्रदेश) युवती हेतु सुशिक्षित एवं संस्कारवान समकक्ष युवक की आवश्यकता है। जाति बन्धन नहीं।

सम्पर्क सूत्र- आर्य कुमार शर्मा (रिटा० डी. एस. पी. भोपाल)
मोबाइल नं.-09424468486
ईमेल-sharmaak22@gmail.com

श्रावणी उपाकर्म व कृष्ण जनमाष्टमी पर्व मनाया

आर्य समाज फिरोजपुर छावनी में श्रावणी व कृष्ण जनमाष्टमी का पर्व बड़े उत्साह व हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। जिसमें आर्य जगत के विद्वान् श्री देवराज जी कपूरथला, पं. मनमोहन शास्त्री जी व सुप्रसिद्ध भजन गायक विजयानन्द के द्वारा भजन व प्रवचन हुए। मुख्य कार्यक्रम में कृष्ण जनमाष्टमी पर्व पर राष्ट्रनायक, धर्म संस्कृति के प्रतीक योगेश्वर भगवान श्री कृष्ण के जीवन पर प्रकाश ड़ाला गया। कार्यक्रम के मुख्य यजमान श्री अजय चावला, श्री प्रहलाद शर्मा जी बनें। श्री सुरेन्द्र मल्होत्रा, विपिन मित्तल, विजय पाल आनन्द, जितेन्द्र गन्नोत्रा, राजपाल सोनी, संजीव अग्रवाल, उमेश आदि महानुभावों ने कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। सभी आर्यजनों ने व्रत लिया कि हम आर्य समाज, ऋषि दयानन्द के सिद्धान्तों का प्रचार करने के लिए तन-मन और धन से सहयोग करेंगे। अन्त में प्रधान श्री विजयानन्द जी ने सभी का धन्यवाद किया। कार्यक्रम का संचालन आर्य समाज के महामन्त्री मनोज आर्य ने किया। ऋषि लंगर के पश्चात सभा विसर्जित हुई।

-सुरेन्द्र कुमार मल्होत्रा प्रचार मन्त्री आर्य समाज

दयानन्द केन्द्रीय विद्या मन्दिर, बरनाला के विद्यार्थियों की प्राप्तियां

पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड की तरफ से ज़िला स्तर पर गुणात्मक और विद्या प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें दयानन्द केन्द्रीय विद्या मंदिर बरनाला के सोलो डांस के पहले वर्ग में एकमदीप ने पहला, भाषण प्रतियोगिता में कबीर सिंह ने दूसरा स्थान प्राप्त किया। कविता प्रतियोगिता के दूसरे वर्ग में शायना ने दूसरा, भाषण में स्नेहा तिवारी ने पांचवा, सोलो डांस में हरप्रीत ने दूसरा चित्रकला में पूजा ने पहला स्थान प्राप्त किया। तीसरे वर्ग में सुन्दर लिखाई में आनंदिता ने तीसरा, चित्रकला में अर्शदीप ने तीसरा तथा एकाग्रता ने कविता उच्चारण में पांचवां स्थान प्राप्त किया। विजेता विद्यार्थियों को स्कूल डायरैक्टर अनीता मित्तल तथा श्रीमती वंदना गोयल ने सम्मानित किया। इन प्रतियोगिताओं की जजमैंट श्री ओम प्रकाश गासों, श्री भुपिंदर सिंह बेदी, डा. अनिल शोरी, श्री पुष्पिन्दर सिंह, श्री हरप्रीत सिंह तथा श्रीमती ज्योति ने की। स्कूल प्रधान श्री भारत भूषण मैनन ने बच्चों को बधाई दी। **-अनीता**

हिन्दी के विकास में आर्य समाज का अहम योगदान: प्रेम भारद्वाज

आर्य समाज नवांशहर की ओर से हिन्दी दिवस के उपलक्ष्य में कार्यक्रम आयोजित

आर्य समाज नवांशहर की ओर से शनिवार को स्थानीय आरके आर्य कालेज में हिन्दी दिवस के उपलक्ष्य में एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामंत्री प्रेम कुमार भारद्वाज मुख्य मेहमान के रूप में शामिल हुए। जबकि पंजाबी यूनिवर्सिटी पटियाला के हिन्दी विभाग के हेड डा. रवि कुमार, पंजाब यूनिवर्सिटी के हिन्दी विभाग के उपाध्यक्ष डा. अशोक कुमार व रामगढ़िया कालेज लुधियाना की प्रिंसिपल डा. नरेन्द्र कौर मुख्य वक्ता के रूप में शामिल हुई। कार्यक्रम की शुरूआत सभी मेहमानों ने सरस्वती के चित्र पर दीप प्रज्वलित करके की। इस दौरान सभा महामंत्री प्रेम भारद्वाज जी ने कहा कि हिन्दी के विकास में आर्य समाज का अहम योगदान रहा है। हिन्दी आंदोलन की बात हो या फिर आर्य संस्थाओं में हिन्दी को बढ़ावा देने का यत्न आर्य समाज की भूमिका अहम रही है। इस दौरान डा. रवि कुमार ने आधुनिक समय में हिन्दी के राजभाषा स्वरूप के महत्व पर चर्चा की तथा कहा कि हिन्दी ही देश को जोड़ने की भाषा है तथा इसे रोजगार से जोड़ना जरूरी है। जब हिन्दी रोजगार की भाषा बन जाएगी तो इसका प्रचार व प्रसार अपने आप बढ़ेगा। डा. अशोक कुमार ने उपस्थित विद्यार्थियों को हिन्दी के साथ जुड़ने तथा आने वाले समय में हिन्दी पठन पाठन के साथ रोजगार के अवसरों को उजागर किया। उन्होंने विद्यार्थियों को हिन्दी को व्यवहारिक रूप में अपनाने का आह्वान किया। कार्यक्रम के दौरान प्रिंसिपल डा. नरिंदर कौर ने विद्यार्थियों को हिन्दी वाचन में आने वाली समस्याओं से अवगत करवाया। इस दौरान आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री प्रेम कुमार भारद्वाज ने आर्य समाज का हिन्दी के उत्थान में योगदान पर प्रकाश डाला तथा हिन्दी को सरकारी व रोजगार की भाषा बनाने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि सरकार को अंग्रेजी की जगह हिन्दी व अन्य भारतीय भाषाओं को बढ़ावा देने का प्रयास करना चाहिए। इस मौके पर कालेज प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट देशबंधु भल्ला, सेक्रेटरी जेके दत्ता, आर्य समाज के वाइस प्रधान विनोद भारद्वाज, मंत्री जिया लाल शर्मा, सुरिंदर मोहन तेजपाल, प्रचार मंत्री अरविंद नारद, विकास नारद, वरिंदर सरीन, बख्तावर सिंह, विपिन तनेजा, राकेश पिंका, कुलवंत राय शर्मा, अरूणेश शर्मा, प्रिंसिपल एसके बारिया, प्रिंसिपल डीएएन कालेज आफ एजुकेशन डा. सरोज भल्ला, प्रिंसिपल बीएलएम गर्ल्ज कालेज मीनाक्षी शर्मा, प्रो. संजीव डाबर, प्रो. विनय सोफट आदि उपस्थित थे। मंच संचालन आर्य कालेज के हिन्दी विभाग के हेड प्रो. संजीव डाबर ने किया। इस दौरान आर्य समाज नवांशहर की ओर से उपस्थित कालेज विद्यार्थियों को वैदिक साहित्य भी बांटा गया।

हिन्दी दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम में हिस्सा लेते हुए सभा महामन्त्री श्री प्रेम भारद्वाज। उनके साथ बैठे हैं प्रिंसीपल डा० नरेन्द्र कौर और विनोद भारद्वाज जी।

–अरविंद नारद, प्रचार मंत्री आर्य समाज नवांशहर

गुरुकुल का आयुर्वेद महान
घर-घर में मिले रोगों से निदान

100 गुरुकुल स्वर्णिम

गुरुकुल च्यवनप्राश
सभी के लिए स्वादिष्ट, रुचिकर, पौष्टिक रसायन।

गुरुकुल पायोकिल
पायोरिया की आयुर्वेदिक औषधि
दांतों में खून रोके, मुंह की दुर्गन्ध दूर करे, मसूड़ों के रोग, ढीले दांत ठीक करे।

गुरुकुल शतशिलाजीत सूर्यतापी
पुष्टीदायक, बलवर्धक
शरीर में नया खून और उत्साह का अनुभव

गुरुकुल ब्राह्मी रसायन
बुद्धिवर्धक, स्फूर्तिदायक, दिमागी कमजोरी दूर करे।

गुरुकुल मधुमेह नाशिनी गुटिका
मधुमेह एवं प्रत्येक प्रकार के प्रमेह में लाभदायक

गुरुकुल मधु
गुणवत्ता एवं ताजगी के लिए

गुरुकुल चाय
खाँसी, जुकाम, इन्फ्लूएंजा व थकान में अत्यंत उपयोगी।

अन्य प्रमुख उत्पाद
गुरुकुल द्राक्षारिष्ट
गुरुकुल रक्तशोधक
गुरुकुल अश्वगंधारिष्ट

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार डाकघर : गुरुकुल कांगड़ी-249404, जिला-हरिद्वार (उत्तरांचल) फोन : 0134-416073

शाखा कार्यालय : 63, गली राजा केदार नाथ, चावड़ी बाज़ार, दिल्ली-6, फोन : 23261871

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा आर. के. प्रिंटर्स प्रैस, टाण्डा फाटक जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। E-mail: apspunjab2010@gmail.com
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।